The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com

सरस्वती विद्या मन्दिर एवं राजकीय इन्टर कॉलिज के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 सुशील कुमार

असिस्टेन्ट प्रोफेसर,

शिक्षक शिक्षा विभाग,

हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद

सारांश :

मनुष्य के निर्माण में मानवता के श्रेष्ट गुणों का विकास शिक्षा के द्वारा होता है। मनुष्य के बुद्धि, कौशल के विकास की गुणवत्ता शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। इसी परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत यह अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में सरस्वती विद्या मन्दिर एवं राजकीय इन्टर कॉलिज के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध मुरादाबाद एवं अमरोहा जनपद में किया गया है। इस प्रकार इस शोध की जनसंख्या मुरादाबाद व अमरोहा जनपद के सरस्वती विद्या मन्दिर एवं राजकीय इन्टर कॉलिजों के कक्षा 6 से कक्षा 12 के सभी छात्र है। शोध में न्यादर्श के रूप में 100 छात्रों का चयन किया गया है।

प्रस्तावना

मनुष्य अन्य प्राणियों से भिन्न है। उसकी भिन्नता का एक आधार उसमें अपने अनुभवों को सुरक्षित रखने तथा उसे अगली पीढ़ी तक पहुँचाने की क्षमता है। जहाँ अन्य प्राणी पीढ़ी दर

पीढ़ी अपनी उन्हीं जीवन प्रक्रियाओं को दोहराते रहते हैं और हर पीढ़ी में नये सिरे से ज्ञानार्जन प्रांरभ करते है वही मनुष्य अपने ज्ञान को आगे बढ़ाता जाता है और विकासात्मक परिवर्तन का रास्ता अपनाता है। मनुष्य में ज्ञान की वृद्धि के साथ–साथ उसकी शक्ति में भी वृद्धि होती है और वह अपने वातावरण से अधिक अच्छा समायोजन स्थापित करता है। समाज एवं उसमें निहित वातावरण समस्त रूप से शिक्षा है जिसमें बालक कुछ न कुछ सीखकर बड़ा होता है और आगे भी सीखता रहता है तथा उपलब्धि को प्राप्त करता है।

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा ही मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के विकास का दूसरा नाम है। इन शक्तियों के द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। कुछ विद्वानों के अनुसार शिक्षा देने और ज्ञान देने में कोई अंतर नहीं है, किन्तु यह धारणा आज भ्रममूलक सिद्ध हो चुकी है, क्योंकि शिक्षा एक प्रक्रिया द्वारा सम्पन्न उपलब्धि है। शिक्षा केवल ज्ञान देने तक ही सीमित नहीं है। शिक्षा जब तक मानव जीव के मूल्यों, आदर्शो, मान्यताओं, ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन नहीं करती है और मानव को सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक नहीं बनाती है तब तक वह शिक्षा नहीं की जा सकती है। शिक्षा के सम्बन्ध में **जॉन लॉक** ने कहा था – **"जिस प्रकार पौधों का विकास कृषि के द्वारा होता है ठीक उसी प्रकार बालक का विकास शिक्षा के द्वारा होता है।"**

1.2 अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान में इण्टरमीडिएट स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों से यदि पूछा जाये कि पढ़कर भविष्य में वे क्या बनाना चाहेंगे तो अधिकांश विद्यार्थियों का उत्तर मिलेगा कि अभी सोचा नहीं। इसका मुख्य कारण है – अनुपयुक्त शिक्षा। "**शिक्षा देश की रीढ़ है जिस प्रकार विकृत रीढ़ से एक व्यक्ति स्वस्थ नहीं कहला सकता है, उसी प्रकार विकृत शिक्षा व्यवस्था से देश का निर्माण नहीं हो सकता।**" यदि प्रारम्भ से ही विद्यार्थियों को उनकी रूचि, क्षमता, योग्यता एवं बौद्धिक अभिक्षमता के आधार पर शैक्षिक प्रोत्साहन दिया जाये तो उनका व्यक्तित्व निखरेगा।

विद्यार्थियों की ''शैक्षिक उपलब्धि तथा 'अभिवृत्ति' विद्यालय या कॉलेज के स्तर को व्यक्त करती है तथा विद्यार्थियों के भविष्य पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि तथा उनकी सोच, विचार, उनके दृष्टिकोण का विशेष प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत शोध पत्र विद्यार्थियों की उपलब्धि एवं 'शैक्षिक अभिवृत्ति' पर 'सरस्वती विद्या मन्दिर' तथा 'राजकीय इण्टर कॉलेज' का प्रभाव जानने के लिए किया गया है।

उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए 'सरस्वती विद्या मन्दिर' तथा 'राजकीय विद्यालयों' के विद्यार्थियों के मध्य 'शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिवृत्ति' इन दो स्तरों पर मूल्याकंन करने से और अधिक गहराई से तथ्य सामने आयेंगे कि क्या विद्यालयों का प्रकार विद्यार्थियों की 'शैक्षिक उपलब्धि' एवं 'शैक्षिक अभिवृत्ति' पर प्रभाव डालता हैं? 'सरस्वती विद्या मन्दिर' तथा 'राजकीय इण्टर कालेज' में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की 'शैक्षिक' उपलब्धि' में कितना अंतर है ? और यदि अंतर है तो क्यों हैं ? क्या दोनों विद्यालयों के विद्यार्थी शिक्षा के प्रति समान दृष्टिकोण रखते हैं ? क्या इनका मानना है कि शिक्षा मानव जीवन के लिए नितान्त आवश्यक हैं ? इन सब कारणों को देखते हुए इस विषय पर अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की।

समस्या कथन– "सरस्वती विद्या मन्दिर एवं राजकीय इन्टर कॉलिज के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।"

समस्या में प्रयुक्त पदों का परिभाषिकरण–

सरस्वती विद्या मन्दिर– सरस्वती विद्या मन्दिर से तात्पर्य ऐसे स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों से है जिनका प्रारमभ 1972 में हुआ था एवं जो कक्षा 6 से लेकर 12 तक की शिक्षा प्रदान करते हैं ये संस्थान विद्या भारती अखिल भारतीय संस्थान से सम्बद्ध है।

राजकीय इण्टर कॉलेज– 'राजकीय इण्टर कॉलेज' से तात्पर्य उत्तर –प्रदेश राज्य सरकार द्वारा संचालित अनुदान प्राप्त राजकीय विद्यालयों से है जो कक्षा छः से कक्षा बारह तक की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

शैक्षिक उपलब्धि– शैक्षिक उपलब्धि, उपलब्धि की एक शाखा है। किसी सीखे गए विशिष्ट विषय की परीक्षा में किसी विद्यार्थी द्वारा प्राप्त प्राप्तांक ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि होती हैं।

शैक्षिक अभिवृत्ति– अभिवृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है, जिसके कारण वह किन्हीं वस्तुओं, व्यक्तियों, संस्थानों, परिस्थितियों, योजनाओं आदि के प्रति किसी विशेष प्रकार का व्यवहार करता है।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. सरस्वती विद्या मन्दिर एवं राजकीय इन्टर कॉलिज के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सरस्वती विद्या मन्दिर एवं राजकीय इन्टर कॉलिज के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं–

1. सरस्वती विद्या मन्दिर एवं राजकीय इन्टर कॉलिज के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरस्वती विद्या मन्दिर एवं राजकीय इन्टर कॉलिज के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमांकन–

प्रस्तुत अध्ययन निम्नांकित सीमाओं के अन्तर्गत किया गया है –

1. अध्ययन का कार्यक्षेत्र केवल मुरादाबाद एवं अमरोहा जनपद को चुना गया है।
2. मुरादाबाद एवं अमरोहा जनपद में संचालित 'सरस्वती विद्या मन्दिर' तथा 'राजकीय इण्टर कॉलेजों' को अध्ययन में शामिल किया गया है।
3. अध्ययन में केवल सरस्वती विद्या मन्दिर तथा राजकीय इण्टर कॉलेज के कक्षा 11 व कक्षा 12 के 100 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
4. अध्ययन में सभी विषय वर्गो (कला, विज्ञान और वाणिज्य) के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

1.3 प्रथम शून्य प्राक्कल्पना (H_{o1})

सरस्वती विद्या मन्दिर एवं राजकीय इण्टर कॉलेज के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका : 1.1 प्रदत्त विश्लेषण से प्राप्त सांख्यिकी

विद्यालय वर्ग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (O_D)	टी. अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
सरस्वती विद्या मंदिर	50	78.64	9.88	2.91	3.03	.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक
राजकीय इण्टर कॉलेज	50	69.81	10.28			

प्राक्कल्पना परीक्षण

तालिका : 1.1 से ज्ञात होता है कि मध्यमान (M) एवं मानक विचलन (S.D.) तथा मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि (O_D) के आधार पर प्राप्त हुआ परिगणित **टी–अनुपात = 3. 03 का मान** $df = N_1 + N_2 -2 = 50 +50 -2 = 98$ के लिए $t_{.05} = 2.01$ तथा $t_{.01}=$ 2.68 से अधिक है। जिससे यह निष्कर्ष निकलता हे कि प्राप्त टी–अनुपात का मान .05 तथा .01 दोनों स्तरों पर सार्थक है।

अतः अध्ययन की शून्य परिकल्पना (H_{01}) **"सरस्वती विद्या मन्दिर एवं राजकीय इण्टर कॉलेज के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"** को निरस्त किया जाता है।

द्वितीय शून्य प्राक्कल्पना (H_{02}) –

सरस्वती विद्या मन्दिर एवं राजकीय इण्टर कॉलेज के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1.2 प्रदत्त विश्लेषण से प्राप्त सांख्यिकी

विद्यालय वर्ग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मानक त्रुटि (O_D)	टी.अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
सरस्वती विद्या मंदिर	50	61.86	9.03	1.68	1.51	असार्थक
राजकीय इण्टर कॉलेज	50	59.32	7.67			

प्राक्कल्पना परीक्षण –

तालिका : 1.2 से ज्ञात होता है कि मध्यमान (M) एवं मानक विचलन (S.D.) तथा मध्यमानों के अंतर की मानक त्रुटि (o_p) के आधार पर प्राप्त हुआ परिगणित **टी–अनुपात = 1. 51** है, जो .05 सार्थकता स्तर एवं .01 सार्थकता स्तर के प्रमाणिक मान क्रमशः 1.96 तथा 2. 58 दोनों से ही कम है। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि प्राप्त टी–अनुपात का मान .05 तथा .01 दोनों स्तरों पर सार्थक नहीं है।

अतः अध्ययन की शून्य परिकल्पना (H_{o2}) **''सरस्वती विद्या मन्दिर एवं राजकीय इण्टर कॉलेज के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''** को स्वीकृत किया जाता है।

परिणाम की व्याख्या– शोध समस्या के परिणाम निकालते समय यह पाया गया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में माध्यमिक शिक्षा की औपचारिक शिक्षण संस्थानों 'सरस्वती विद्या मन्दिर' एवं 'राजकीय इण्टर कॉलेज' का कोई सार्थक नहीं प्रभाव पड़ा है। दोनों ही शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

उनका मानना है कि शिक्षा ही केवल मानव जीवन को बेहतर बना सकती है। वह शिक्षा ही है जो व्यक्ति की वैयक्तिकता का पूर्ण विकास करती है। शिक्षा ही हमारी तर्क, बुद्धि एवं तथ्यपूर्ण सोचने के ढंग को तीक्ष्ण बनाती है। शिक्षा ही जीवन और नागरिकता के कर्त्तव्यों और दायित्वों के लिए तैयार करती है और उसके व्यवहार विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन लाती है जो समाज, देश और विश्व के लिए हितकर होता है। शिक्षा के बिना मानव का जीवन निराधार है।

द्वितीय शून्य प्राक्कल्पना– विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर शिक्षण संस्थानों 'सरस्वती विद्या मन्दिर' एवं राजकीय इण्टर कॉलेज' का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है, को स्वीकार किया गया है।

परिणाम की व्याख्या– इसी प्रकार यदि हम दोनों शिक्षण संस्थानों के छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति को देखते हैं तो पाते है कि सरस्वती विद्या मन्दिर के छात्र हों या फिर राजकीय इण्टर कॉलेज के छात्र हो, दोनों ही शिक्षा के लिए समान दृष्टिकोण रखते हैं। दोनों शिक्षण संस्थानों के छात्रों का एक मत होकर मानना है कि शिक्षा ही मनुष्य ही जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्यपूर्ण विकास में योगदान देती है। उसे वातावरण से सामंजस्य स्थापित

करने में सहायता देती है। मानव के जीवन में जितना मूलभूत आवश्कतायें – रोटी, कपड़ा और मकान का महत्व है उतना ही शिक्षा का भी महत्व है। शिक्षा के अभाव में मानव का जीवन पशु समान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय, रामशकल (2012) : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
2. अग्निहोत्री, रवींद्र : भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ।
3. सिंह, अरूण कुमार, (2015) : शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पटना।
4. पाठक, पी०डी० (2011) : शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2
5. सारस्वत, मालती (2012) : शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, लखनऊ।
6. शर्मा, आर०ए० (2014) : शिक्षा अनुसंधान, आर०लाल बुक डिपो, मेरठ।
7. अस्थाना, बिपिन/श्रीवास्तव, विजया/अस्थाना, निधि (2011) : शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
8. सिंह, अरूण कुमार (2015) : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, पटना।
9. गुप्ता, एस०पी० (2014) : अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
10. पाण्डेय, के०पी० (2012) : शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
11. राय, पारसनाथ (1999) : अनुसंधान परिचय, अग्रवाल पब्लिकेशंस, आगरा।
12. अस्थाना, विपिन (1990) : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्याकंन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
13. गुप्ता, एस०पी० (2009) : आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
14. कपिल, एच०के० (2000) : सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
15. गुप्ता, सत्येन्द्र (2005) : बुन्देलखण्ड (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मंदिर संस्थानों के शैक्षिक योगदान, झाँसी।
16. शर्मा, तृषा (2013) : सरस्वती शिशु मन्दिर तथा शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि, वैयक्तिक मूल्य तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, भिलाईनगर, छत्तीसगढ़।

17. Economic Suervy (2012-13) : Office of the Register General : 2012, India ; M Home Affaris
18. Statistics of School Education (2010-11) : Government of India, Ministry of Human Resource Development Bureau of Planning Monitoring and Statistics, New Delhi 2012

Website References

1. https://cn. Wikipedia.org/wiki/Vidya Bharati
2. www. vidyabharti.net.in
3. https://books.google.co.in/books?isbn=9381865345
4. https://hi.wikipedia.org//wiki/अभिवृत्ति

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-January-2023/06

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 सुशील कुमार

For publication of research paper title

सरस्वती विद्या मन्दिर एवं राजकीय इन्टर कॉलिज के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-04, Month January, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com